जच्चाओं की ऊंची मृत्यु-दर

(डाक्टर पेंडसे द्वारा उदयपुर के आर.एन.टी. मैडिकल कालिज में किए एक अध्ययन की रपट पर आधारित)

मध्य 1983 से मध्य 1985 तक अस्पताल में आए 100 केसों का अध्ययन किया गया।

उदयपुर ज़िले में 15फी सदी आबादी शहरी है, बाकी ग्रामीण। चारों ओर पहाड़ी इलाका है। स्त्री शिक्षा की दर 11फी सदी है। सिर्फ 20फी सदी गांवों तक पक्की सड़कें हैं। 21फी सदी गांव रेल या बस से जुड़े हैं। 70फी सदी गांवों में बिजली नहीं है। कुल 6 अस्पताल, 69 डिस्पेंसरियां और 19 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हैं। 18 परिवार नियोजन केन्द्र हैं। ज़्यादातर जच्चाओं को इसी अस्पताल में लाया जाता है जहां यह अध्ययन किया गया।

अधिकतर केसों में पौष्टिक भोजन न मिलने के कारण खून की कमी थी। तरंतु खून न दे सकने के कारण मौतें होती हैं। देरी का कारण ज़्यादातर केसों में साथ आए रिश्तेदारों का खून देने के लिए तैयार न होना था। खून देने के नाम से वे भाग खड़े होते थे।

बच्चे के जन्म से पहले देखभाल

आम धारणा है कि बच्चा जनना प्राकृतिक क्रिया है। इसमें डाक्टरी सहायता और देखभाल जरूरी नहीं है। गर्भ की शुरुआत से मां की देखभाल की जरूरत है, यह बात उनके दिमाग में घुसती ही नहीं। ऐसा सिर्फ अशिक्षा या स्वास्थ्य केन्द्रों की कमी के कारण नहीं है। अधिकतर स्वास्थ्य केन्द्रों में इस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जाता। जब तक डाक्टर और स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता इसके महत्व को बार-बार बताएंगे नहीं, लोग इसे समझेंगे नहीं।

अस्पताल पहुंचने में मरीजों को औसतन तीन घंटे लगते थे। सिर्फ तीन केसों में अस्पताल की एंबुलेंस मिल पाई। तीन केसों में खदानों की डिस्पेंसरी वाली एंबुलेंस मिली। 37फी सदी औरतें प्राइवेट जीप से, 25फी सदी आटो-रिक्शा से अस्पताल आईं या बस स्टॉप तक। 26फी सदी औरतों को भीड़ भरी बस से आना पड़ा। 60 फी सदी केसों में बैलगाड़ी का प्रयोग किया गया। 12 फी सदी ट्रक से आईं।

अस्पताल और प्राथमिक केन्द्रों के पास जीप या एंबुलेंस होने के बावजूद जच्चाओं को एंबुलेंस नहीं मिल सकीं। लालफीताशाही के कारण पैट्रोल पर चैक रखा जाता है। यह भी भुला दिया जाता है कि जीवन-मृत्यु का सवाल है।

जो औरतें अस्पताल में भर्ती होने के दो घंटे के अंदर मर गईं उनके लिए कुछ भी कर पाना असंभव था। 72फी सदी मौतें 24 घंटों के अंदर हुईं। उनमें कुछ भी कर पाना संभव नहीं था। अस्पताल में पूरे समय जांच-पड़ताल की सुविधा नहीं थी। ज़्यादा केस आने से सुविधाएं कम होती जा रही हैं। राजस्थान में एक लाख प्रजननों में 700-800 जच्चा मर जाती हैं। जनाना अस्पताल में यह संख्या 900 रिकार्ड की गई। देश के अन्य भागों के औसत से यह दो गुना है।

□